

2064

4

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास  
कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उसके पास  
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त  
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

(2000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2064

F

Unique Paper Code : 2055091001

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya Ka  
Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : GE : Hindi A

Semester : II

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (10,10)

(क) हिंदी भाषा का सामान्य परिचय

(ख) पहाड़ी हिंदी की प्रमुख बोलियाँ

P.T.O.

2064

2

- (ग) खड़ी बोली का क्षेत्र  
(घ) पूर्वी हिंदी
2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (10,10)
- (क) सिद्ध साहित्य  
(ख) सूफी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ  
(ग) भारतेन्दु युग  
(घ) प्रगतिवाद
3. कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

‘बिहारी का काव्य भक्ति, नीति और शृंगार का समन्वय है।’ इस कथन पर विचार कीजिए।

4. नागार्जुन का साहित्यिक परिचय लिखिए। (15)

अथवा

‘हिमाद्रि तुंग शृंग’ से कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

2064

3

5. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10,10)

(क) कबीर गुर गरवा मिल्या, रलि गया आटैं लूँण ।

जाति पाति कुल सब मिटे, नांव धरौगे कौण ।

अथवा

हरि म्हारा जीवन प्राण आधार ।

और आसिरो णा म्हारा थें विण, तीनूँ लोक मँझार ।

थें विण म्हारे जग णा सुहावाँ, निरख्या सब संसार ।

मीराँ रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक निहार ।

(ख) उनके अलौकिक दर्शनों से दूर होता पाप था,

अति पुण्य मिलता था तथा मिटता हृदय का ताप था ।

उपदेश उनके शांतिकारक थे निवारक शोक के

सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के ।

अथवा